अध्याय : 5

कालिदास : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

अध्याय : 5

कालिदास : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

भूमिका :-

मोहन राकेश का "आषाढ़ का एक दिन" और सुरेन्द्र वर्मा का "आठवाँ सर्ग" - ये दो नाटक संस्कृत महाकवि कालिदास को परिलक्ष्यित करते हुए लिखे गये हैं। कालिदास ऐतिहासिक व्यक्ति है और अपनी असाधारण साहित्य साधना के कारण ही विश्वविख्यात हुआ है। गुप्तकाल के स्वर्णयुग का यह स्वर्णिम कवि अपनी भावयत्री तथा कारयत्री प्रतिभा के कारण विश्वभर में चमक रहा हैं। कालिदास का "शाकुन्तल" नाटक अमर कवि की अमर रचना है। कालिदास से प्रभावित होकर हमारे हिन्दी नाटककारों ने उपर्युक्त दो ऐसे नाटक हिन्दी में लिखे हैं जो रंगमंचपर सफलता के साथ खेले गये हैं। और हिन्दी जगत में अत्यन्त लोकप्रिय हुए हैं। ये दोनों नाटक भारत के अनेक महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के पाठयक्रम में भी लगे हुए हैं। इससे इन दो नाटको की महत्ता और लोकप्रियता सहजही ध्यान में आ जाती है। अध्याय - 3 और अध्याय - 4 में नाटककारों द्वारा चित्रित कालिदास पर काफी विवेचन -विश्लेषण किया गया है। अब हम विवेच्य - दो नाटकों में चित्रित कालिदास का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं।

कालिदास की चरित्रसृष्टि में नाटककारों का दृष्टिकोण :-

कालिदास की चरित्रसृष्टि में नाटककार मोहन राकेश और नाटककार सुरेन्द्र वर्मा ने अपना-अपना दृष्टिाकोण व्यक्त किया है और अपने-अपने नाटक लिखे हैं। कालिदास की चरित्रसृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करते समय उन नाटककारों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखना आवश्यक है क्यों कि नाटयसृजन में नाटककार की

अपनी दृष्टि महत्वपूर्ण होती है भले ही वह दृष्टि पाठकों, समीक्षकों, दर्शकों को स्वीकृत हो या न हो लेकिन नाटककार की दृष्टि को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

1· मोहन राकेश का दृष्टिकोण :-

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक 1956 में पहली बार प्रकाशित हुआ और उसके अनेक प्रयोग दिल्ली, कलकत्ता, लखनौं, इलाहाबाद, नागपुर, कानपुर, ग्वालियर तथा कई अन्य स्थानोंपर सफलतापूर्वक हुए है। और कालिदास की ऐतिहासिकता और चरित्र को लेकर विद्वानों ने अनेक विवाद उपस्थित किए। उन विवादों का उत्तर नाटककार मोहन राकेश ने "लहरो के राजहंस (1963) नाटक की प्रस्तावना "पहली भूमिका" में दिया है। कालिदास के चरित्र संबंधी नाटककार मोहन राकेश का दृष्टिकोण इस प्रकार है।

क· कालिदास का चरित्र :-

"आषाढ़ का एक दिन" में कालिदास का जैसा भी चरित्र है, वह उसकी रचनाओं में समाहित उसके व्यक्तित्व से बहुत हटकर नहीं है, हाँ आधुनिक प्रतीक के निर्वाह की दृष्टि से उसमें थोड़ा परिवर्तन अवश्य किया गया है। यह इसलिए कि कालिदास मेरे लिए एक व्यक्ति नहीं, हमारी सृजनात्मक शक्तियों का प्रतीक है, नाटक में वह प्रतीक उस अन्तर्द्वन्द को संकेतित करने के लिए है जो किसी भी काल में सृजनशील प्रतिभा को आन्दोलित करता।का यह व्यक्ति कालिदास यह नाम भी वास्तविक न हो, पर हमारी आज तक की सृजनात्मक प्रतिभा के लिए इससे अच्छा दूसरा नाम, दूसरा संकेत, मुझे नहीं मिला। ···"आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास दुर्बल नहीं है, कोमल, अस्थिर और अन्तर्द्वन्द से पीड़ित है। ···· आषाढ़ का एक दिन" में पराजित व्यक्ति टूटा हुआ कालिदास नहीं, अपने में संयोजित विलोम हैं - क्योंकि विजय और पराजय के संकेत वे दोनों स्वयं नहीं हैं, संकेत है मल्लिका जो कालिदास की आस्था का विस्तारित रूप है।"

ख) **इतिहास-दृष्टि :-**

मोहन राकेश ने "लहरों के राजहंस" नाटक की भूमिका में अपनी इतिहास दृष्टि और साहित्य-सृजन सृष्टि पर भी कुछ विचार व्यक्त किया है जो इस प्रकार है - "इतिहास या ऐतिहासिक व्यक्तित्व का आश्रय साहित्य को इतिहास नहीं बना देता। इतिहास तथ्यों का संकलन करता हैं, उन्हें एक समय तालिका में प्रस्तुत करता है। साहित्य का ऐसा उद्देश्य कभी नहीं रहा। इतिहास के रिक्त कोष्ठों की पूर्ति करना भी साहित्य का उपलब्धि-क्षेत्र नहीं है। साहित्य इतिहास के समय से बँधता नहीं, समय में इतिहास का विस्तार करता हैं, युग से युग को अलग नहीं करता, कई कई युगों को एक साथ जोड़ देता है। इस तरह इतिहास के "आज" और "कल" उसके लिए "आज" और "कल" नहीं रह जो, समय की असीमता में कुछ ऐसे जुडे हुए क्षण बन जाते हैं, जो जीवन को दिशा संकेत देने की दृष्टि से अविभाज्य हैं। इस तरह साहित्य में इतिहास अपनी यथातथ्य घटनाओं में व्यक्त नहीं होता, घटनाओं को जोड़ने वाली ऐसी कल्पनाओं में व्यक्त होता अपने ही एक नये और अलग रूप में इतिहास का निर्माण करती है। यह निर्माण रूढिगत अर्थ में इतिहास नहीं हे।"[1]

2· **सुरेन्द्र वर्मा का दृष्टिकोण :-**

प) **कालिदास : चरित्र-सृष्टि :-**

सुरेन्द्र वर्मा ने "आठवाँ सर्ग" नाटक के "लेखन का वक्तव्य" में कालिदास के चरित्र और सृजनात्मक कार्य पर इस प्रकार प्रकाश डाला है - "ये तो "कुमारसम्भव" महाकाव्य पूरा, 17 सर्गों का मिलता है, लेकिन यह लगभग सर्वमान्य है कि इससे पहले आठ सर्ग ही कालिदास रचित हैं। आठवें सर्ग में शिव-पार्वती की केवल विलास-क्रीड़ाओं का स्वच्छंद चित्रण है। अलंकार-शास्त्रियों ने इसके लिए कवि पर सुरुचिहीनता का दोषारोपण भी किया है। टीकाकार अरुणगिरिनाथ ने एक किंवदंती का उल्लेख किया है, जिसके अनुससाद उद्दाम श्रृंगार के ऐसे नग्न वर्णन पर पार्वती कुपित हुई और उनके शाप के कारण यह रचना अधूरी रह गयी। इन बातों से पता चलता है कि कदाचित कालिदास के समय में ही इस प्रकार के आक्षेप होने लगे थे।"[3]

फ) **ऐतिहासिक आधार :-**

प्राचीन ग्रन्थों में एक पट्टबंध सम्मान का उल्लेख है। कालिदास का उज्जयिनी में ऐसा सम्मान हुआ था। दूसरे, मेहरौली के लौहस्तंभ के अभिलेख से प्रकट होता है कि चन्द्रगुप्त के विरुद्ध बंगप्रदेश ने संघटित होकर दन्द मचाया था।"[4]

ब) **छूट का स्वीकार :-**

"नाटक में एक जगह "वृहत्संहिता" का नाम आया है, पर उसके लेखक वराहमिहिर कालिदास के परवर्ती माने जाते हैं।"[5]

ड) **निदेशकीय वक्तव्य :-**

सुरेन्द्र वर्मा एवं राजेन्द्र गुप्त :-

य) **"आठवाँ सर्ग" नाटक की रचना-प्रक्रिया :-**

नाटककार सुरेन्द्र वर्मा ने आठवाँ सर्ग की रचना प्रक्रिया के बारे में निदेशकीय वक्तव्य में यह उल्लेख किया है कि "आठवाँ सर्ग" के दो अंक पहले लिख थे, जो "कथा" में छपकर फाइल में बंद पड़े थे। दूसरे अंक का अंत कालिदास की इस मजबूर घोषणा से होता था कि वह "कुमारसम्भव" को आठवें सर्ग पर ही छोड देगा - अधूरा मन के एक कोने में बराबर लगता था कि बात यहाँ पूरी नहीं होती।"[6]

इसलिए नाटककार सुरेन्द्र वर्मा ने नाटक के दो अंकों के बाद तीसरे अंक की रचना की। "निदेशकीय वक्तव्य" में नाटककार सुरेन्द्र वर्मा लिखते हैं - "एक रचनाकार रचना की उत्कृष्टता से जनसामान्य में जड़ जमाकर सत्ता के सामने विराट हो जाता है।"[7]

र) **अश्लीलता का प्रश्न :-**

अश्लीलता के पक्ष पर " निदेशकीय वक्तव्य" में सुरेन्द्र वर्मा ने इस प्रकार विचार व्यक्त किये गये है - ""कुमारसम्भव" के ब्याज से लिया गया अश्लीलता

का पक्ष तो समकालीन कला के लिए प्रासंगिक है ही, पर अगर आपत्कालीन भारत में लेखकीय अभिव्यक्ति बनाम शासन के रेखांकन की दुहरी सार्थकता की प्रतीति न होती, तो ऊपर उल्लिखित आत्मान्वेषण के मोह के बावजूद अच्छे-खासे चल रह उपन्यास (अंधेरे से पर) को छोड़कर यह प्रस्तुति शुरू न की जाती।"[8]

कालिदास का जीवनवृत्त :-

क) **आविर्भाव और विवाह :-**

नाटककार मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा दोनों ने कालिदास का अविर्भाव गुप्त कालीन स्वर्णयुग माना है और दोनों ने अपने नाटकों में गुप्तवंश के एक प्रबल सम्राट चन्द्रगुप्त की ओर संकेत किया है। यह चन्द्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ही माना जा सकता है। दोनों नाटककारों ने जिस गुप्तवंशीय सम्राट या सम्राट चन्द्रगुप्त का उल्लेख किया है उनकी बेटी प्रियंगुमंजरी है। इस प्रियंगुमंजरी का विवाह हमारे विवेच्य महाकवि कालिदास के साथ हुआ, इस बात का स्वीकार किया है। विशेष बात यह है कि "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में मोहन राकेश ने प्रियंगुमंजरी को गुप्तवंशीय राजदुहिता नाम से संकेतित किया है। इसके विपरीत सुरेन्द्र वर्मा ने अपने "आठवाँ सर्ग" नाटक में प्रियंगुमंजरी सम्राट चन्द्रगुप्त की पुत्री है इसका स्पष्ट उल्लेख कियाा है। लेकिन दोनों नाटककारोने अपने नाटको में स्पष्टतया यह उल्लेख नहीं किया है कि प्रियंगुमंजरी सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय "विक्रमादित्य" की बेटी है। इसकी वजह शायद यह हैं कि इतिहासकारोने कालिदास का समय कालिदास की पत्नी आदि के बारें में भिन्न-भिन्न मत प्रकट किये हैं। तथापि इतना सही है कि दोनों नाटककारोने अप्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्षतया यह स्वीकार किया है कि कालिदास गुप्तकालीन स्वर्णयुग का कवि और नाटककार है। एक किंवदन्ती के अनुसार कालिदास की पत्नी का नाम विद्योत्तमा[9] है जिसका उल्लेख दोनों नाटककारोंने अपने नाटको में नहीं किया है, जो उचित है।

ख) **जन्मभूमि :-**

कालिदास की जन्मभूमि के बारे में दोनों नाटककार मौन है। मोहन राकेश ने आषाढ़ का एक दिन नाटक के प्रारंभ में जिस पहाड़ी प्रदेश का उल्लेख किया

है वह प्रदेश उज्जयिनी के नजदीक का प्रदेश हो सकता है और सुरेन्द्र वर्मा ने अपने नाटक में जिस, शिप्रा नदी का उल्लेख किया है वह नदी उज्जयिनी के नजदीक है। इससे एक बात स्पष्ट है कि कालिदास की जन्मभूमि उज्जयिनी के नजदीक ही होगी, अति दूर नहीं होगी। जैसा कि कुछ इतिहासकारोंने कालिदास को कश्मीरी या बंगाली माना है। जहाँ नाटककार मोहन राकेश ने पहाड़ी प्रदेश के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने नाटक में मल्लिका के माध्यम से काव्यात्मक शब्दों में लिया हैं[10] वहाँ सुरेन्द्र वर्मा ने "आठवाँ सर्ग" नाटक में शिप्रा नदी के प्राकृतिक सौदर्य का वर्णन कीर्तिभट्ट के माध्यम से नाटक के प्रारंभ में किया है[11] और नाटक के अंत में स्वयं कालिदास के माध्यम से चित्रित किया है।[12]

ग) <u>बचपन :-</u>

नाटककार मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में कालिदास के बचपन पर कुछ प्रकाश डाला है। कालिदास का बचपन उसके नाना मातुल के घर में बिता था और वह गायें चराने का काम करता था। लेकिन सुरेन्द्र वर्मा ने अपने नाटक में कालेदास के बचपन और रहन-सहन का बिलकुल उल्लेख नहीं किया है।

घ) <u>मित्र-शत्रु :-</u>

नाटककार मोहन राकेश ने कालिदास के किसी विशेष मित्र का उल्लेख नहीं किया है। नाटक में कालिदास का मित्र विलोम का उल्लेख किया गया है लेकिन वहाँ मित्र शब्द ज्यादातर व्यंग्यधर्मी है । विलोम मित्र की अपेक्षा दुश्मन ही जान पड़ता है।[13] इसके विपरीत सुरेन्द्र वर्मा ने अपने नाटक में कालिदास के मित्र का उल्लेख किया है जिसका नाम सौमित्र[14] है जो कालिदास का सच्चा मित्र दिखाई पड़ता है। जो साहित्य को नई दृष्टि से परखने वाला युवक है। लेकिन इस नाटक में दिङ्नाग[15] का उल्लेख एक कालिदास कालीन लेखक तथा कालिदास के साहित्य का आलोचक और कुटिल नीतिज्ञ के रूप में किया गया है।

ड) सेवक और परिचारिका :-

"आषाढ़ का एक दिन" में कालिदास के सेवक या कर्मचारी का प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है बल्कि "आठवाँ सर्ग" में सेवक के रूप में कीर्तिभट्ट का और परिचारिकाओं के रूप में प्रियंवदा और अनसूया का उल्लेख है। ये दोनों परिचारिकाएँ, कालिदास और उसकी पत्नी प्रियंगुमंजरी की अंतरंग सेविकाएँ है। "आषाढ़ का एक दिन" की रंगिणी और संगिनी प्रियंगुमंजरी की सेविकाएँ हैं।

कालिदास : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

"आषाढ़ का एक दिन" और "आठवाँ सर्ग" मे चित्रित कालिदास का तुलनात्मक अध्ययन करना इस अध्याय का प्रतिपाद्य है। अतः कालिदास की चरित्रसृष्टि को लेकर कुछ महत्वपूर्ण पहलूओंपर इसप्रकार प्रकाश डाला जा सकता है।

अ) इतिहास दृष्टि :-

मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा दोनों नाटककारों ने इतिहासप्रसिद्ध संस्कृत कवि-कुलगुरू कालिदास के चरित्र को ध्यान में रखकर अपने नाटकों की रचना की हैं। इन नाटककारो ने कालिदास के चरित्र को अंकित करते समय अपने दृष्टिकोणों के अनुसार, उसका चरित्र उद्घाटित किया है। विशेष बात यह है कि मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" में कालिदास का जो चरित्र प्रस्तुत किया है वह इतिहास पुरूष कालिदास होकर भी पूर्णतया आधुनिक कालिदास या आधुनिक रचनाकार है। कालिदास के चरित्र-चित्रण में मोहन राकेश ने केवल इतिहास को पृष्ठभूमि के देखकर एक नये कालिदास की सृष्टि की है। लेकिन सुरेन्द्र वर्मा ने ऐतिहासिक कालिदास को महत्व देकर कालिदास की एक प्रमुख रचना "कुमारसम्भव" और "आठवाँ सर्ग" ध्यान में रखकर कालिदास के चरित्र की सृष्टि अपने नाटक "आठवाँ सर्ग" में की है। एक ने इतिहास में अपनी कल्पनाओं को जोड़कर एक नया और अलग इतिहास निर्माण करने की कोशिश की है तो दुसरे ने ऐतिहासिक संदर्भ को अधिक महत्व देकर रचनाकार के व्यक्ति-स्वातंत्र्यपर अधिक बल दिया है।

दोनों नाटककारों ने इतिहास और साहित्य का अन्योन्य संबंध और इतिहास से साहित्य की भिन्नता अपने नाटकों में व्यक्त की हैं।

साहित्य-साधना :-

प्रेरणास्त्रोत :-

क§ **प्राकृतिक सौंदर्य :-**

कालिदास की साहित्य-साधना के प्रेरणास्त्रोतों में एक प्रेरणास्त्रोत प्राकृतिक सौंदर्य है। नाटककार मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में स्वयं कालिदास के मुँह से अपनी जन्मभूमि का पहाड़ी प्रदेश का उल्लेख करते हुए प्रकृति-प्रेमी के रूप में साहित्य-साधना की है इसका स्पष्ट उल्लेख है। विशेषतः कालिदास की प्रथम रचना "ऋतुसंहार" उसने अपनी जन्मभूमि मे ही पूरी की है। एक देहाती कवि की यह प्रथम रचना है। जिस रचना को पढकर उज्जयिनी के सम्राट और वहाँ के राजदरबारी खुश हुए।

सुरेन्द्र वर्मा लिखित "आठवाँ सर्ग" नाटक में दर्शाया गया है कि "कुमारसम्भव" के आठवे सर्ग की रचना कालिदास ने एकान्तवास में शिप्रा नदी के तटपर बसी हुई पर्ण-कुटी में की है। शिप्रा नदी का प्रदेश प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है।

ख§ **प्रेयसी-पत्नी :-**

कालिदास की साहित्य-साधना का एक और महत्वपूर्ण प्रेरणास्त्रोत उसकी प्रेयसी या पत्नी है। प्रेयसी के रूप में मल्लिका और पत्नी के रूप में प्रियंगुमंजरी है।

नाटककार मोहन राकेश ने "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में कालिदास के साहित्य की प्रेरणा मल्लिका को दर्शाया है। नाटक के तीसरे अंक में नाटककार ने कालिदास के प्रमुख ग्रंथो का उल्लेख कर मल्लिका को प्रेरणास्त्रोत माना है। यहा - "कुमारसम्भव" की पृष्ठभूमि यह हिमालय है और तपस्विनी उमा तुम हो। "मेघदूत" के यक्ष की पीड़ा मेरी पीडा है और विरह विमार्दिता यक्षिणी तुम हो यद्यपि मैंने स्वयं यहाँ होने और तुम्हें नगर में देखने की कल्पना की। "अभिज्ञान शाकुन्तल" में शकुन्तला के रूप में तुम्हीं मेरे सामने थीं।"[16]

इसके विपरीत नाटककार सुरेन्द्र वर्मा ने अपने "आठवाँ सर्ग" नाटक में कालिदास की पत्नी राजदुहिता प्रियंगुमंजरी कालिदास के साहित्य की प्रेरणा माना है। सुरेन्द्र वर्मा ने अपने नाटक में मुख्यतया कालिदास के "कुमारसम्भव" महाकाव्य के आठवें सर्ग की रचना का प्रेरणास्त्रोत विवाहिता प्रियंगुमंजरी को माना है और पति-पत्नी की प्रणय भावना और श्रृंगारिकता का विस्तृत विवेचन नाटक के पहले अंक में किया है। श्रृंगार का यह वर्णन शयनागार में किया गया है। कालिदास को पत्नी प्रियंगुमंजरी सौंदर्यवती है और नवविवाहिता होने के कारण पति-पत्नी का केलि क्रीडा का वर्णन किया है। इस श्रृंगारिक वर्णन में प्रियंगुमंजरी की केलि क्रीडा का ऐसा वर्णन किया है कि जिसकी वजह से प्रियंगुमंजरी का अंतःपुर दिखाई देता है। प्रियंगु के शब्दो में - "उज्जयिनी के जिस नागरिक ने कभी राजप्रासाद के सिंहद्वार में भी पैर नहीं रखा, मुझे कभी देखा नहीं, जाना नहीं, वह इस आठवें सर्ग के पृष्ठ खोलेगा ··· और मेरे भवन के अन्तःपूर के शयनागार के बन्द द्वार खुलने लगेंगे।"[17] इससे स्पष्ट है कि कालिदास के साहित्य का प्रेरणास्त्रोत उसकी पत्नी प्रियंगुमंजरी है।

"आषाढ़ का एक दिन" के कालिदास की प्रेरणा देहाती युवती और दरिद्रता का सामना करनेवाली है जब कि "आठवाँ सर्ग" की प्रेरणा प्रियंगुमंजरी पूरी तर से राज-सी युवती है। उन दोनों की वेशभूषाओं में भी काफी अंतर है। मल्लिका की वेशभूषा एक देहाती युवती की है जबकि "आठवाँ सर्ग" की प्रियंगुमंजरी की वेशभूषा राज-सी है। यथा-कुंकुमी अंशुक, हंसो के जोडेवाला दुकूल ···· कानों में कनककमल गले में इन्द्रनील मुक्तावली, बांहों और कलाइयों में अंगद और वलय, उँगलियों में नीलम की अँगूठियाँ, कटि में रत्नोंजड़ी मेखला···।"[18]

यहाँ एक बात और ध्यान में रखने की जरूरत है कि जहाँ 'आठवाँ सर्ग' की प्रियंगुमंजरी कालिदास के साहित्य की प्रेरणा बनी रही है वहाँ "आषाढ़ का एक दिन" की प्रियंगुमंजरी कालिदास के साहित्य की प्रेरणास्त्रोत नहीं है। स्वयंम् कालिदास ही इस बात की गवाही देता है मैं जानता हूँ कि मैंने वहाँ (उज्जयिनी) रहकर कुछ नहीं लिखा। जो कुछ लिखा है वह यहाँ (देहात) के जीवन का ही

संचय था।"[19] कालिदास यह भी सूचित करता है कि उसने अपने और मल्लिका के इतिहास को फिर-फिर दोहरा कर भी साहित्य की रचना की लेकिन जब उससे हटकर लिखना चाहा तो वह रचना प्राणवान नहीं हुई।"[20]

जहाँ "आषाढ़ का एक दिन" नाटक में कालिदास के "ऋतुसंहार"[21] का महत्व बताया गया है वहाँ "आठवाँ सर्ग" में कालिदास के "अभिज्ञान शाकुन्तल" की स्वर्ण-जयन्ती[22] के समारोह का और कालिदास के सफल कवि और नाटककार के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है। जहाँ "आषाढ़ का एक दिन" में कालिदास के साहित्य पर अनुसंधान करनेवाली दो छात्राओं- रंगिणी संगिनी के अनुसंधान कार्य[23] का संकेत किया गया है वहाँ "आठवाँ सर्ग" में कालिदास के "कुमारसम्भव" को अधूरा छोड़कर उसे संदूक में रखा जाने का संकेत मिलता है।[24]

साहित्य और राजनीति :-

प) कालिदास का राजसम्मान :-

"आषाढ़ का एक दिन" और "आठवाँ सर्ग" दोनो नाटकों में कालिदास के राजसम्मान का वर्णन किया गया है। विशेष बात यह है कि "आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास गुप्तसम्राट के आमंत्रण पर उज्जयिनी जाता है और राजसम्मान पाता है तथा मातृगुप्त नाम से विभूषित होता है। इसके विपरीत "आठवाँ सर्ग" के कालिदास के राजसम्मान का आयोजन किया जाता है लेकिन राज-गोष्ठी में "कुमारसम्भव" का "आठवाँ सर्ग" अश्लील घोषित किया जाता है और कवि के राजसम्मान को सम्राट चन्द्रगुप्त स्थगित करता है। इतना ही नहीं इस नाटक के अंत में "अभिज्ञान शाकुन्तल" के स्वर्ण-जयन्ती के उपलक्ष्य में कालिदास के सम्मान समारोह का आयोजन किया जाता है। "अभिज्ञान शाकुन्तल" नाटक रंगमंचपर खेला जाता है। लेकिन इस समारोह में कालिदास उपस्थित नही रहता है लेकिन उसकी अनुपस्थिति में ही जनता द्वारा उसकी प्रशंसा की जाती है और उसे सम्मानित किया जाता है। कालिदास का यह जनसम्मान राजसम्मान से बढ़कर है।

फ) **साहित्य में अश्लीलता का प्रश्न :-**

"आषाढ़ का एक दिन" में कालिदास के "कुमारसम्भव" का उल्लेख नाटककारने किया है और तपस्विनी उमा को प्रेयसी मल्लिका बना दिया है। "कुमारसम्भव" के आठवे सर्ग के बारे में अश्लीलता के प्रश्न पर बिलकूल कुछ भी नहीं लिखा है। इसके विपरीत "आठवाँ-सर्ग" में नाटक के दूसरे अंक में "कुमारसम्भव" का आठवां सर्ग अश्लील होने की सविस्तर चर्चा की गयी है। इस चर्चा के प्रमुख व्यक्ति धर्माध्यक्ष है और राजपुरोहित भी हैं। "आठवाँ सर्ग" अश्लील न माननेवालो में कालिदास का मित्र सौमित्र है। सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" नाटक में "कुमारसम्भव" के आठवे सर्ग में अश्लीलता के प्रश्न पर सम्राट चन्द्रगुप्त द्वारा न्यायसमिति नियुक्त की जाती है लेकिन इस न्यायसमिति के अध्यक्ष और सदस्य साहित्यकार और उसकी रचना धर्मिता के बारे में अनभिज्ञ है। इस न्यायसमिति का केवल एक सदस्य सौमित्र, जो कालिदास का मित्र है,एक नया समीक्षक है जो आठवें सर्ग को अश्लील नही मानता है। कालिदास ही न्यायसमिति की खिल्ली उड़ाता है और समिति के अध्यक्ष धर्माध्यक्ष का भी उपहास करता है। अश्लीलता के संबंध में नियुक्त की गई न्यायसमिति आज की न्यायसमिति पर करारा व्यंग्य है।

स) **रचनाकार का व्यक्ति-स्वातंत्र्य :-**

"आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास रचनाकार की स्वतंत्रता को माननेवाला और राजकीय सम्मान से उदासीन रहनेवाला है लेकिन अपनी प्रेयसी मल्लिका के अनुरोधपर और दरिद्रता के कारण राज्याश्रय का स्वीकार करता है लेकिन बाद में कश्मीर के प्रशासक के रूप में असफल बनकर मल्लिका के घर वापस लौटता है। मल्लिका के साथ पुनश्च नया जीवन शुरू करने की इच्छा व्यक्त करता है किन्तु मल्लिका के घर के अन्दर से बच्ची की आवाज सुनकर उसे पता चलता है कि मल्लिका माँ बन गयी है और इसीकारण वह मल्लिका को ठुकराकर बहिर्गमन करता है। इसके विपरीत सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" नाटक का कालिदास "कुमारसम्भव" को अधूरा छोड देता है लेकिन "अभिज्ञान शाकुन्तल" की स्वर्ण-जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में उपस्थित न रहकर भी जनता द्वारा सम्मानित होता है और सारे विश्व को दिखाता है कि सच्चा रचनाकार एक ऐसी रचना का रचयिता होता है कि जो अपनी स्वतंत्रता को ही प्रकट करता है और प्रतिष्ठित होता है।

भा§ **कालिदास के व्यक्तित्व के अन्य पहलू :-**

"आषाढ़ का एक दिन" और "आठवाँ सर्ग" दोनों नाटको में चित्रित कालिदास के व्यक्तित्व में इसप्रकार साम्य है कि दोनों कालिदास प्रतिभासंपन्न नाटककार और कवि है। दोनों प्रकृतिप्रेमी है लेकिन दोनों कालिदास में काफी अंतर हैं। "आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास कोमल कवि है, टूटा-हारा हुआ है। मातृगुप्त से कालिदास बनने की इच्छा करनेवाला असफल कवि है वह परिस्थिति का दास पश्चातापदग्ध तथा पलायनवादी कालिदास है। इसके विपरीत "आठवाँ सर्ग" का कालिदास राज्याश्रित कलाभिरुचिसंपन्न कालिदास है। जैसे को तैसा प्रवृत्तिवाला है, शराबी है, अत्यधिक स्वाभिमानो है रचनाकार की स्वतंत्रता पर अड़िग है सफल कवि और नाटककार के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

रंगमंचीय बोध :-

य§ **मंचसज्जा :-**

"आषाढ़ का एक दिन" की मंचसज्जा एक देहाती नारी का प्रकोष्ठ है और यह प्रकोष्ठ नाटक के पहले, दूसरे और तीसरे अंक में अम्बिका और मल्लिका की दरिद्रता को दिखानेवाला है। पहले अंक की अपेक्षा दूसरे अंक की मंचसज्जा अधिक टूटी-फूटी दिखाई गयी है और तीसरे अंक की मंचसज्जा दूसरे अंक की अपेक्षा और टूटी-फूटी दिखाई गयी है। इसके विपरीत सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" नाटक की मंचसज्जा राजकवि कालिदास का भव्य-दिव्य भवन है जो दर्शकों को गुप्तकालीन स्वर्णयुग का वैभव, ऐश्वर्य और कलासंपन्नता दिखाती हैं। इस प्रकार दोनो नाटकों की मंचसज्जा में महदन्तर है।

र§ **अभिनेयता :-**

"आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास नाटक के प्रथम अंक में देहाती कवि के रूप में मंचपर दिखाई पडता है जो आहत हरिणशावक की सुश्रुषा करता है, विलोम के साथ संघर्ष करता है और मल्लिका से बिदाई लेकर उज्जयिनी चला

जाता है इसके विपरीत सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" नाटक का कालिदास मंचपर अपनी पत्नी प्रियंगुमंजरी के साथ संयमित प्रणय-शृंगार करता हुआ नजर आता है। "आषाढ़ का एक दिन" के दूसरे अंक में प्रत्यक्ष रंगमंचपर कालिदास नहीं दिखाई देता है लेकिन घोडों के टापों की आवाज से उसका उज्जयिनी से अपने गाँव वापस आने का और फिर वहाँ से कश्मीर जाने का संकेत मिलता है। इसके विपरीत सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" के दूसरे अंक में कालिदास रंगमंचपर कुछ समय तक मंचपर नहीं दिखाई देता है लेकिन उसका राज-गोष्ठी में "कुमारसम्भव" में काव्यपाठ का दृश्य प्रियंगुमंजरी, अनसूया तथा सौमित्र एवं कीर्तिभट्ट के वार्तालाप के द्वारा दर्शाया गया है। जिस प्रकार क्रिकेट मैच की कॉमेंट्री हम रेडियों पर सुन सकते हैं लेकिन प्रत्यक्षतया मैच नहीं देख पाते उसी प्रकार कालिदास का राज-गोष्ठी में हुआ पाठ उपर्युक्त पात्रों के वार्तालाप द्वारा हम सुन सकते हैं, लेकिन देख नहीं पाते हैं।

लेकिन न्यायसमिति की नियुक्ति उसके सदस्य और इस समिति का उपहास हम धर्माध्यक्ष और कालिदास के बीच हुए वार्तालाप से मंचपर देख सकते हैं।

"आषाढ़ का एक दिन" नाटक के तीसरे अंक में हम कालिदास को एक मात-विक्षत, टूटा-हारा हुआ साधारण व्यक्ति अपनी प्रेयसि मल्लिका के साथ बातचीत करते हुए देखते हैं और एक पलायनवादी साधारण व्यक्ति के रूप में नाटक के अंत में देखते हैं।

इसके विपरीत सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" नाटक के तीसरे अंक में कालिदास के "अभिज्ञान शाकुन्तल" नाटक के स्वर्ण-जयन्ती के धूमधाम का वर्णन मुख्यतया अनसूया प्रियंवदा तथा कीर्तिभट्ट के और प्रियंगुमंजरी के वार्तालाप द्वारा देखते हैं किन्तु अचरज की बात यह है कि इस समारोह में कालिदास उपस्थित नही रहता है फिर भी उसकी प्रतिष्ठा होती है। नाटक के तीसरे अंक के अंत में कालिदास मंचपर इसप्रकार नजर आता है कि जो महाकवि की रचनाधर्मिता पर गर्व करता है उसकी गर्वोक्ति मंचपर दर्शकों को लुभा सकती हैं। रचनाकार की स्वतंत्रता का अभियान यहाँ कालिदास के माध्यम से दिखाई पडता है।

"आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास मल्लिका के घर से पलायन करता हुआ दिखाई पड़ता है लेकिन सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" का कालिदास "कुमारसम्भव"

की पाण्डुलिपि लेकर उसके पन्ने पलटता दिखाई देता है और उसके साथ उसकी पत्नी प्रियंगुमंजरी भी दिखाई पड़ती है। इस प्रकार तीसरे अंक में दोनों कालिदासों के क्रियाव्यापार की भिन्नता सहज की दृष्टिगोचर होती है। "आषाढ़ का एक दिन" और "आठवाँ सर्ग" की रंगमंचीय प्रस्तुति के कुछ फोटों कालिदास के व्यक्तित्वपर प्रकाश डालने की दृष्टि से दृष्टव्य हैं -

"आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास

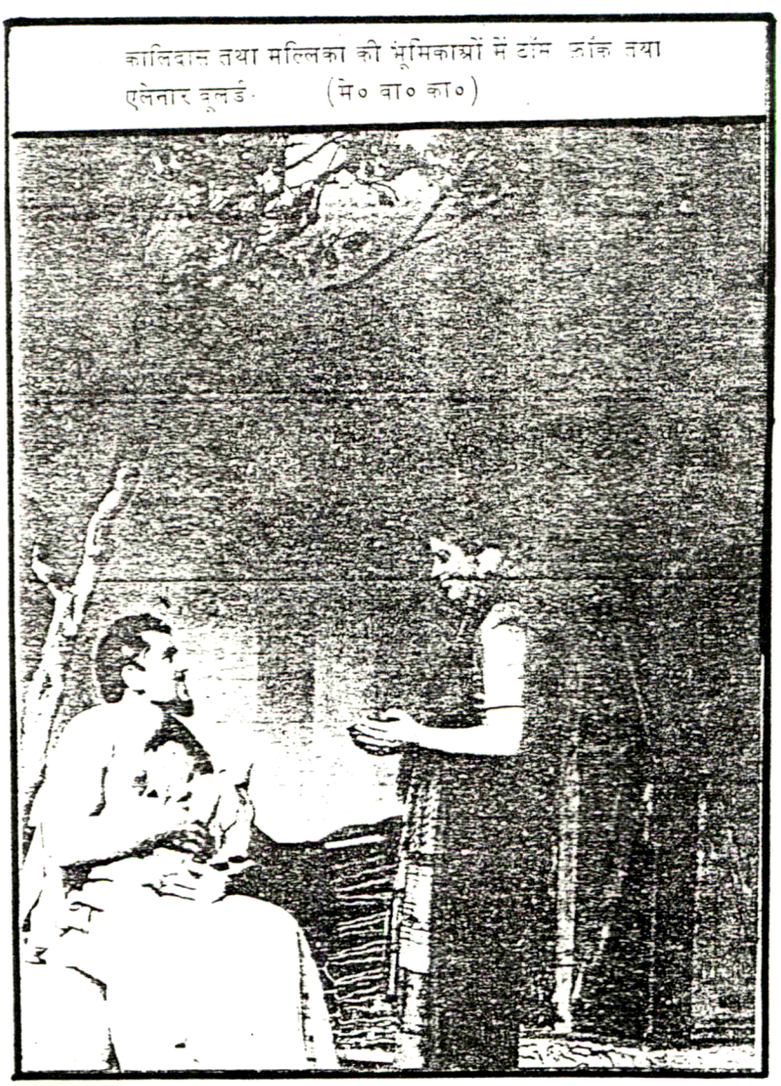

कालिदास तथा मल्लिका की भूमिकाओं में टॉन डांक तथा एलेनार बूलर्ड (मे० वा० का०)

मल्लिका तथा कालिदास।
कालिदास की भूमिका में वी० के० शर्मा (थि० यू०)

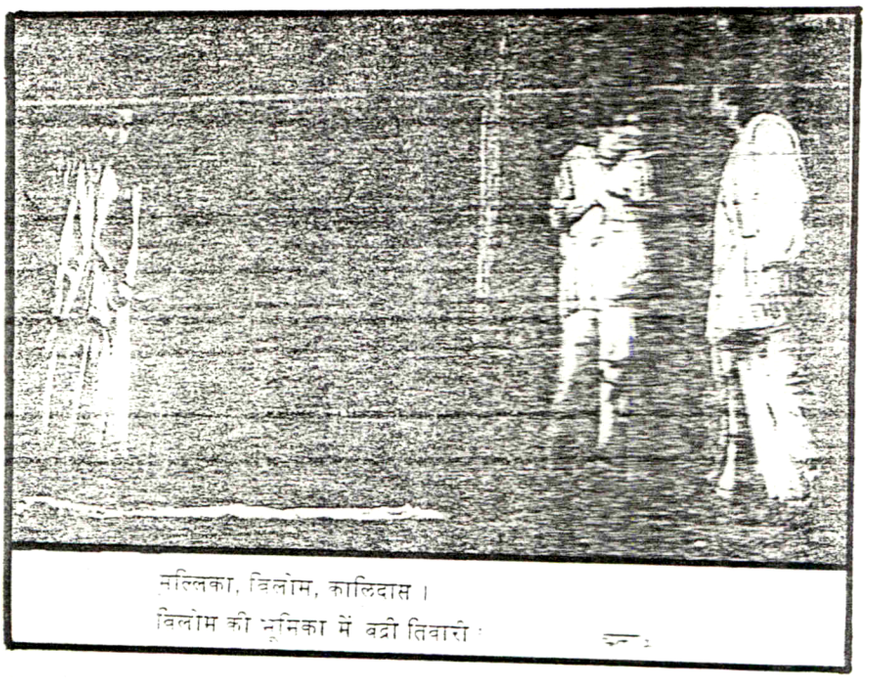

मल्लिका, विलोम, कालिदास ।
विलोम की भूमिका में बद्री तिवारी ।

कालिदास, मल्लिका, विलोम ।
कालिदास की भूमिका में ओम् शिवपुरी,
विलोम की भूमिका में अश्विनी अग्निहोत्री

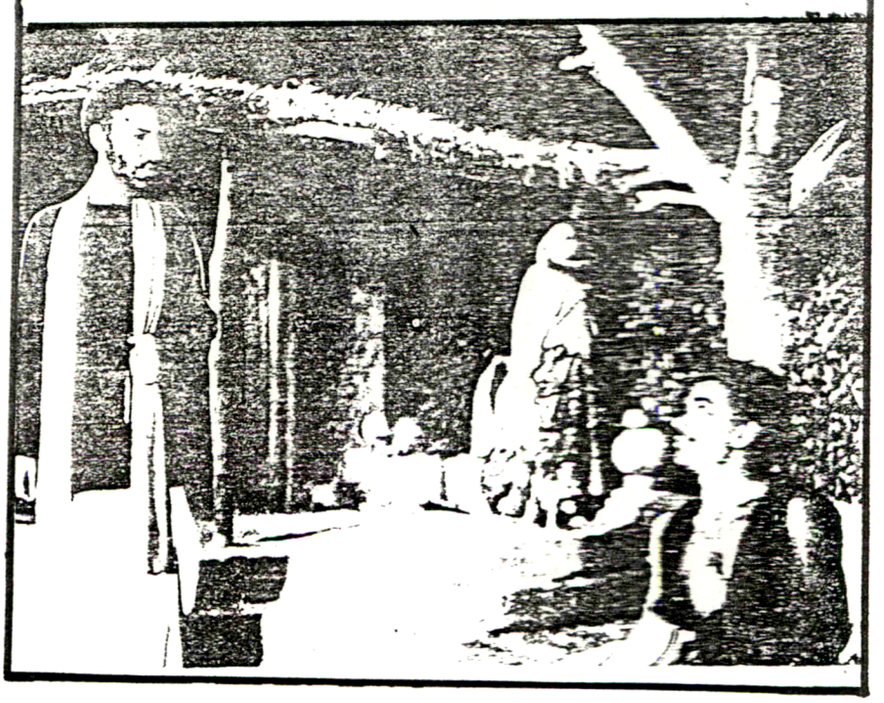

"आठवाँ सर्ग" का कालिदास

'आठवां सर्ग' के पहले मंचन में :

प्रियंगु (सुरेखा सीकरी) तथा कालिदास (मनोहर सिंह)

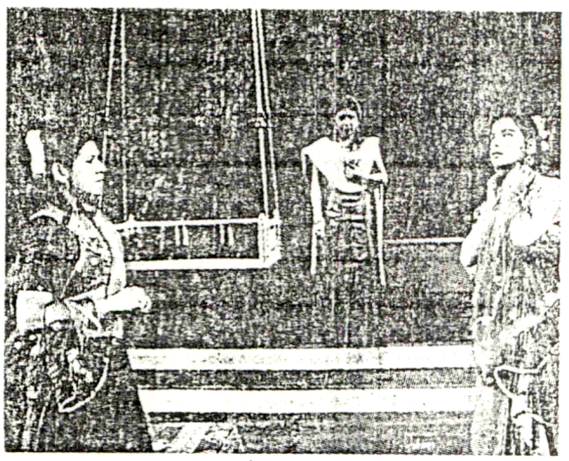

अनसुया (उत्तरा बावकर) प्रियंवदा (सोनू कृष्णन) तथा प्रियंगु (सुरेखा सीकरी)

'आठवां सर्ग' के प्रथम मंचन के दो और दृश्य :

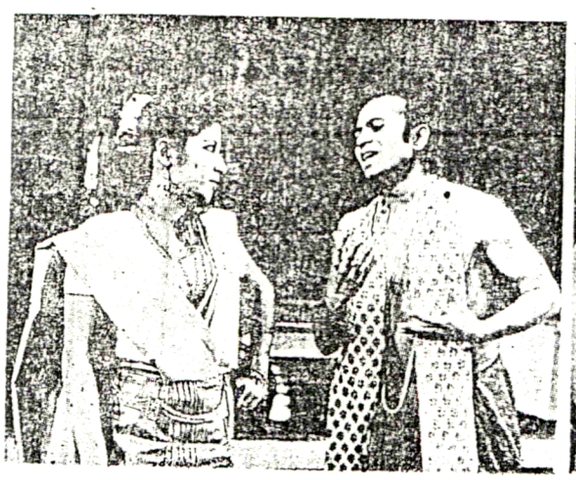

प्रियंवदा (सोनू कृष्णन) और कीर्तिभट्ट (सुधीर कुलकर्णी)

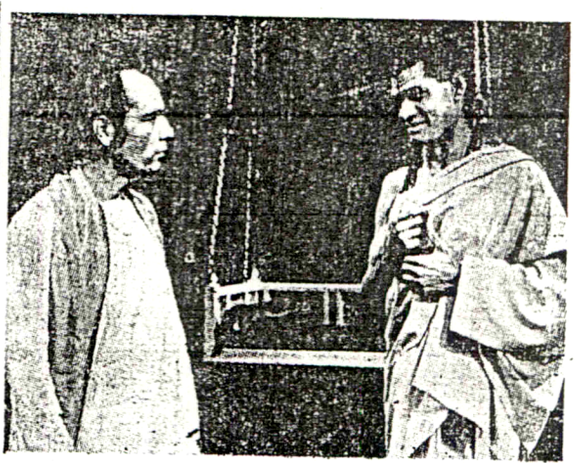

कालिदास (मनोहर सिंह) और धर्माध्यक्ष (राजेश विवेक)

दोनों नाटकों में रंगमंचपर दिखाई देनेवाले कालिदास और अनुषंगिक पात्रों को देखकर नाटककार द्वारा चित्रित कालिदास निर्देशकों के निर्देशन में कैसे भिभभिभ दिखाई देता है यह सहज ही समझ में आता है। तथा उनकी अभिनेयता भी विविध भावों की सृष्टि करती हुई नजर आती है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि -

1. मोहन राकेश के "आषाढ़ का एक दिन" में चित्रित कालिदास और सुरेन्द्र वर्मा के "आठवाँ सर्ग" में चित्रित कालिदास दोनों नाटककारों की अपनी अपनी दृष्टि में की गयी चरित्रसृष्टि है।

2. "आषाढ़ का एक दिन" का कालिदास ऐतिहासिक तथ्यों की अपेक्षा काल्पनिक अधिक है लेकिन उस कल्पना में लेखक की प्रतिभा का एक अलग परिचय पाठकों, दर्शकों आदि को मिलता है। इस नाटक में चित्रित कालिदास मानवीय अधिक हैं जिसे भूला नहीं जा सकता है।

3. "आठवाँ सर्ग" का कालिदास मुख्यतया अधिक इतिहास सम्मत कालिदास है जो गुप्तकालीन स्वर्णयुग के राजकवि का प्रतिनिधित्व कर सकता है। साथ ही साथ 'कुमारसम्भव' के आठवें सर्ग की अश्लीलता का प्रश्न न्यायसमिति का संगठन और रचनाकार का व्यक्तिस्वातंत्र्य आदि बातें आधुनिक युगबोध की परिचायक हैं।

4. संक्षेप में "आषाढ़ का एक दिन" और "आठवाँ सर्ग" में चित्रित कालिदास दोनों नाटककारो की अपनी-अपनी दृष्टि के ही मनोज्ञ चित्र है। एक में ऐतिहासिकता कम है और दूसरे में ऐतिहासिकता की अधिकता है लेकिन दोनों रचनाधर्मिता की दृष्टि से रचनाकार की स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति की दृष्टि से वरेण्य है। और दोनों का रंगमंचीय बोध विशिष्ट है।

संदर्भ :-

1· लहरों के राजहंस - मोहन राकेश, पृ· 8-9 संस्क - 1976

2· वही पृ·9

3· आठवाँ सर्ग - सुरेन्द्र वर्मा पृ· 7 संस्क· 1981

4· वही पृ· 7-8

5· वही पृ· 8

6· वही पृ· 9

7· वही पृ· 9

8· वही पृ· 9

9· संस्कृत साहित्य का इतिहास - शिवबालक द्विवेदी पृ· 30 संस्क·1976

10· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश पृ· 2-4 संस्क·1986

11· आठवाँ सर्ग - सुरेन्द्र वर्मा पृ· 18 संस्क· 1981

12· वही पृ· 69

13· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश पृ38-40संस्क· 1986

14· आठवाँ सर्ग - सुरेन्द्र वर्मा पृ· 28 संस्क· 1981

15· वही पृ· 29, 41

16· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश पृ· 102 संस्क· 1986

17· आठवाँ सर्ग - सुरेन्द्र वर्मा पृ· 33-34 संस्क· 1981

18· वही पृ· 24

19· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश पृ· 102 संस्क· 1986

20· वही पृ· 102

21· वही पृ· 20

22· आठवाँ सर्ग - सुरेन्द्र वर्मा पृ· 63 संस्क· 1981

23· आषाढ़ का एक दिन - मोहन राकेश पृ·56 संस्क· 1986

24· आठवाँ सर्ग - सुरेन्द्र वर्मा, पृ·74 संस्क· 1981